लड़का क्या है?
लड़की क्या है?

कमला भसीन

चित्र : बिंदिया थापर

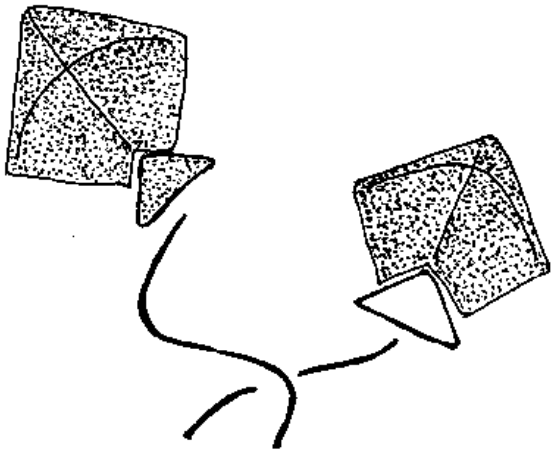

प्रस्तावना

आजादी के पचास बरस बाद भी हमारे देश में लड़कियों और औरतों को दूसरे दर्जे का इंसान माना जाता है। बेटी पैदा होने पर खुशी नहीं होती, उन्हें पूरा प्यार, देखरेख, खाना-पानी, दवा-दारू नहीं दिया जाता। कहते हैं न, बेटे को मक्खन, बेटी को छाछ। कहीं-कहीं तो बेटी को पैदा होने से पहले या पैदा होते ही मार दिया जाता है।

परिवार के अंदर इस तरह का भेदभाव, अन्याय हो यह बहुत ही अजीब बात है क्योंकि इस तरह के भेदभाव से सिर्फ लड़कियों और औरतों को ही नुकसान नहीं होता, पूरे परिवार और समाज को नुकसान होता है। घर के आधे लोग सेहतमंद, पढ़े-लिखे व खुशहाल हों और आधे कमजोर, अध-पढ़े व बुझे-बुझे हों तो ये वैसा ही है जैसे किसी किसान का आधा खेत लहलहाता हो और आधे की फसल मुरझाई हो, खराब हो।

इन हालातों को बदलना जरूरी है और बदलने के लिए इन्हें समझना जरूरी है। कुछ लोगों का मानना है कि कुदरत ने ही औरत-मर्द में असमानता पैदा की है। क्या यह सच है, या यह सच है कि ये फर्क और भेदभाव समाज के बनाए हैं? क्या लड़के-लड़की के तौर-तरीके, पसंद-नापसंद, उनके हुनर और उनके रास्ते कुदरत के रचे हैं, या हमारे रचे हैं?

इस छोटी सी किताब में इन्हीं सवालों पर चर्चा छेड़ने की कोशिश की है ताकि हमारी बेटियों की जिंदगी में भेदभाव और नाइंसाफी खत्म हो, हमारे बेटों पर कुछ खास गुण, व्यवहार, तौर-तरीके थोपे न जाएं और हमारे परिवारों में प्यार, सद्भाव और शांति हो। लड़के-लड़कियों, औरतों और मर्द बराबरी के माहौल में मिलजुल कर आगे बढ़ सकें। उम्मीद है यह किताब आपको पसंद आएगी और आपके काम भी आएगी।

कमला भसीन

दिसंबर, 1997

लड़की क्या है?
लड़का क्या है?
बच्चा जब पैदा होता है, तो वह
या लड़की होता है, या लड़का।

लड़की क्या होती है?
कुछ लोग कहते हैं,
जिसके लंबे बाल हों,
वह लड़की है।

कुलदीप के लंबे बाल हैं पर वह तो लड़का है।

कुछ लोग कहते हैं, जो जेवर पहने वह लड़की है।

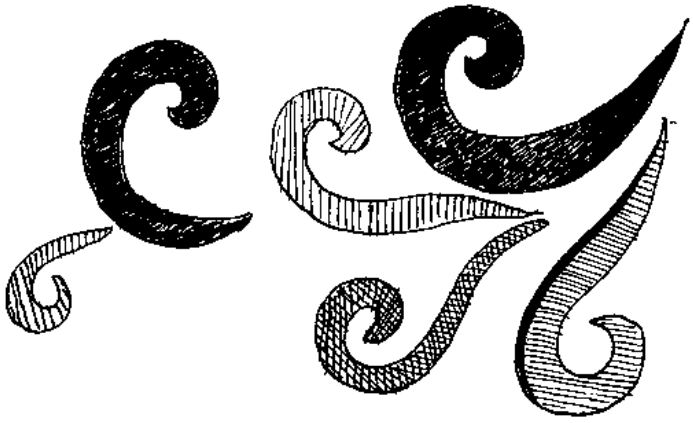

मेघराज माला पहनता है
और कानों में मुरकियां भी पहनता है,
और वह लड़का है।

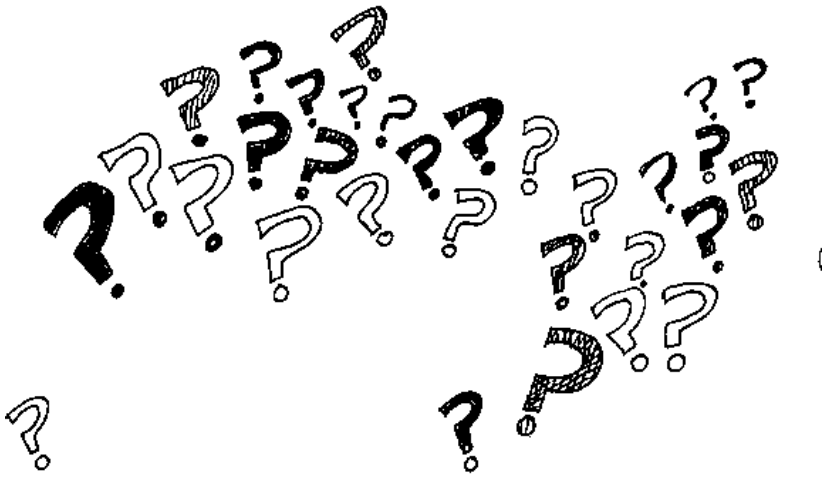

लड़का क्या होता है?
कुछ लोग कहते हैं जो नेकर पहने
और पेड़ों पर चढ़ पाये वह लड़का है।

शांति नेकर पहनती है,
झट पेड़ पर चढ़ पाती है
और वह लड़की है।

कुछ लोग कहते हैं जो ताकतवर हों
और भारी बोझ ढो पाएं वे लड़के हैं।

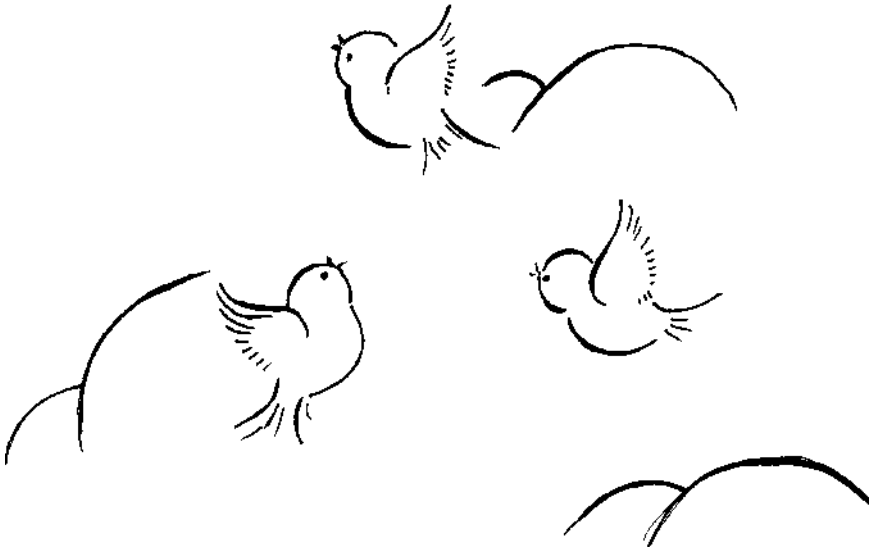

सईदा और नफीसा
दो-दो मटके
या लड़की के गट्ठर उठाती हैं,
और वे लड़कियां हैं।

कुछ लोग कहते हैं
जो घर के कामों में मदद करती है।
वह लड़की है।

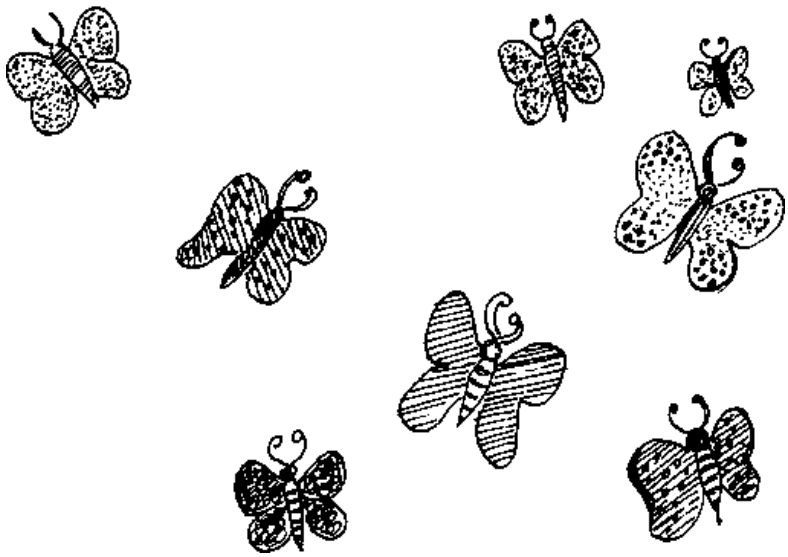

जोसेफ खाना पकाने,
सफाई करने में मदद करता है।
वह एक लड़का है।

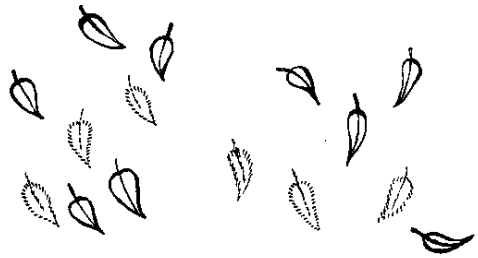

कुछ लोग कहते हैं
– खेतों पर काम करने वाले
लड़के होते हैं।

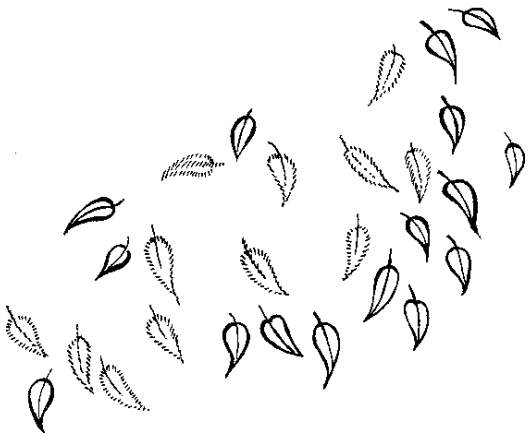

बलजीत और उसकी मां
खेत पर काम करती हैं।
वे लड़की और औरत हैं।

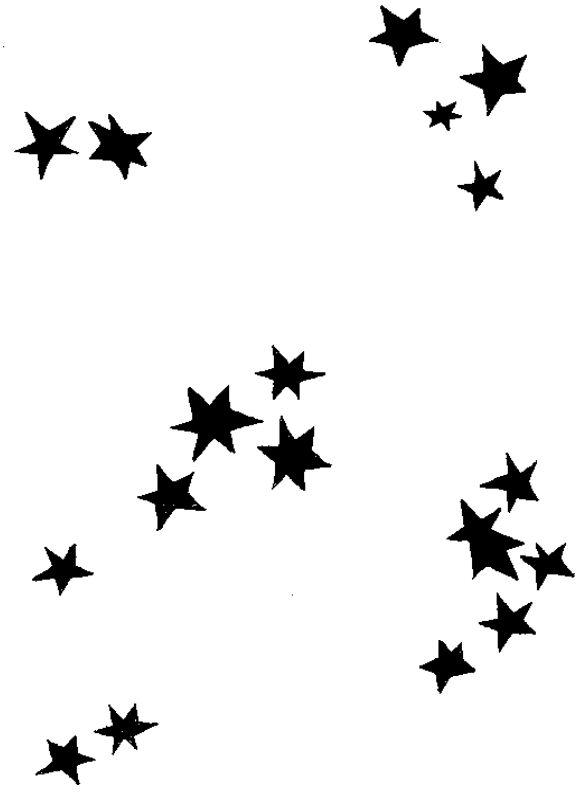

कुछ लोग कहते हैं
जो हाट-बाजार करते हैं
वे मर्द हैं।

वल्ली मछली बेचने बाजार जाती है।

वह लड़की है।

कुछ लोग कहते हैं जो कोमल है,

जिसमें ममता है वह लड़की है।

कबीर, कोमलता और ममता से भरा है।
वह दिन भर अपनी छोटी बहन को संभालता है
और वह एक लड़का है।

कुछ लोग कहते हैं
जो समाज में अच्छी तरह
बंदोबस्त का काम कर सके
वह मर्द है।

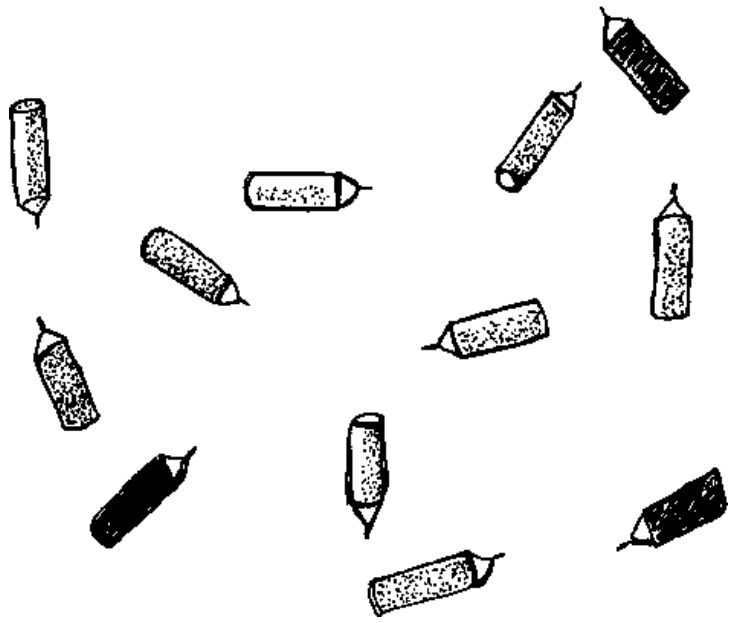

अरुणा, जिले की कलैक्टर होने के नाते
पूरे जिले का बंदोबस्त करती है
और वह औरत है।

तो फिर लड़का क्या है?
लड़की क्या है?

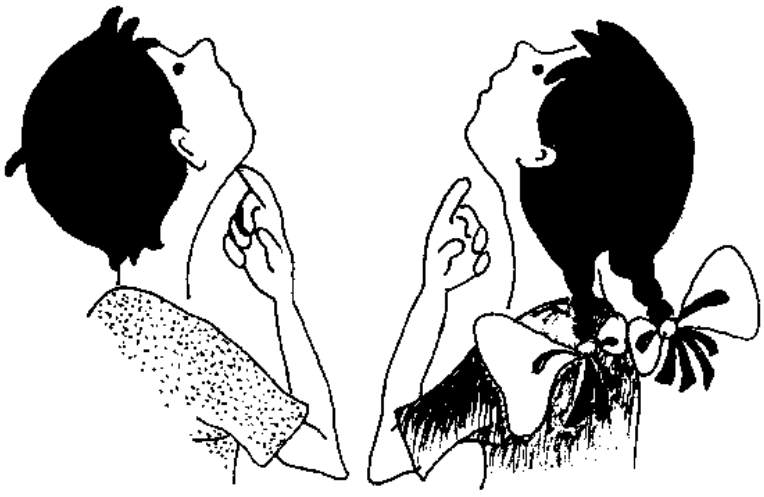

लड़का वह है जिसके लिंग और अंडग्रंथियां हों।

लड़की वह है
जिसके योनि
और टीटनी हो।

हर लड़का बड़ा होकर मर्द बनता है। हर मर्द के लिंग और अंडग्रंथियां होते हैं।
हर लड़की बड़ी होकर औरत बनती है। हर औरत के योनि, बच्चेदानी और स्तन होते हैं।
औरत के शरीर में बच्चा बनता है और बढ़ता है और वह बच्चे को जन्म देती है और दूध पिलाती है।

शरीर के इस फर्क के अलावा लड़के और लड़की में कोई फर्क नहीं है।
और जिस्म की बनावट में भी समानता कहीं ज्यादा है, फर्क बहुत कम।
यौनिक और प्रजनन के अंगों के अलावा सब अंग एक से हैं।
इस शारीरिक या जिस्मानी बनावट को प्राकृतिक लिंग कहते हैं।
अपने शरीर की बनावट की वजह से लड़के का लिंग पुरुष और लड़की का स्त्री होता है।
द्ययह प्राकृतिक लिंग भेद प्रकृति ने बनाया है और यह भेद हर परिवार,
समाज और देश में एक सा होता है –
यानि शारीरिक रूप से लड़का हर जगह लड़का होता है और लड़की हर जगह लड़की।

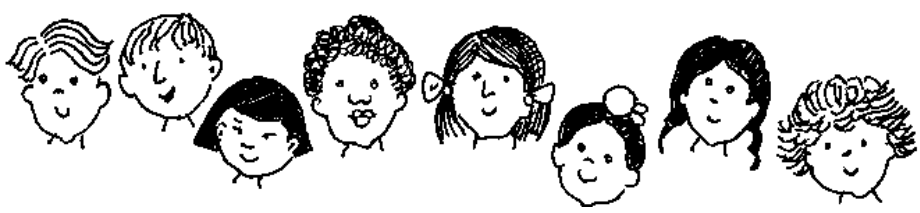

शारीरिक भेद के अलावा जो लड़के-लड़की में भेद बना दिए जाते हैं
– जैसे उनके कपड़े, व्यवहार, शिक्षा,
उनकी और समाज का रवइया, सामाजिक भेद हैं, प्राकृतिक नहीं।
तभी तो ये भेद हर परिवार और समाज में एक-जैसे नहीं हैं।

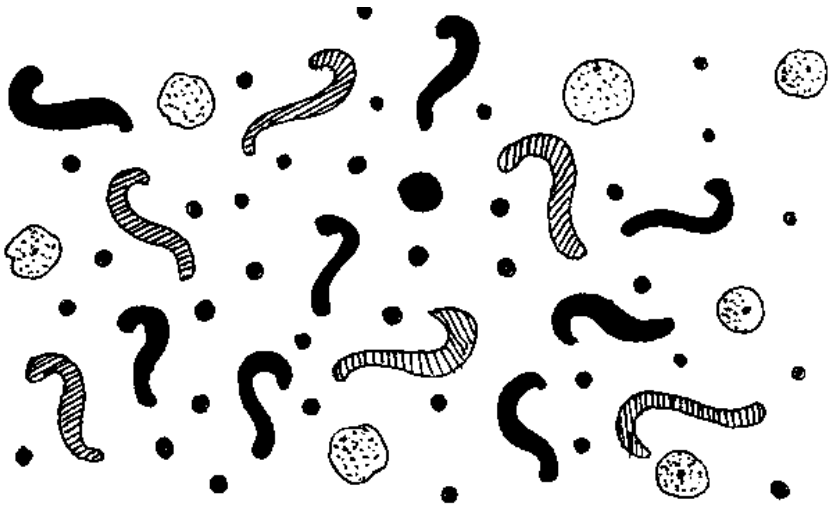

जैसे हमने देखा किसी लड़की के बाल लंबे हो सकते हैं, किसी के छोटे।
कुछ परिवारों में लड़के घर का काम करते हैं, कुछ में नहीं।
कोई औरत घर पर ही काम करती है,
कोई हाट-बाजार भी करती है – आदि।

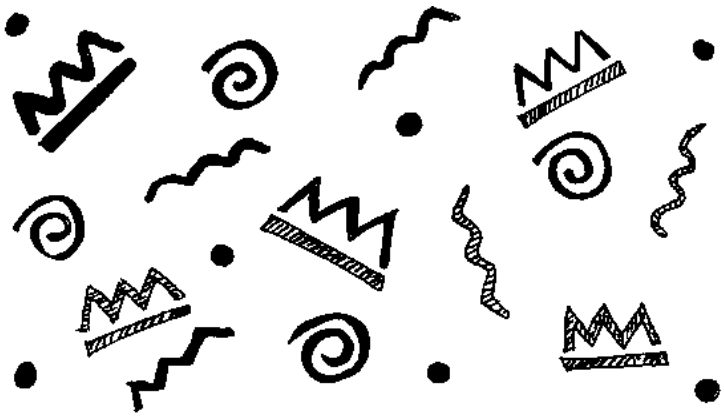

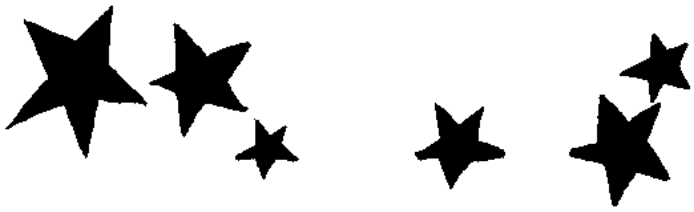

समाज की दी हुई औरत-मर्द की परिभाषा को
सामाजिक लिंग या जैन्डर कहते हैं।

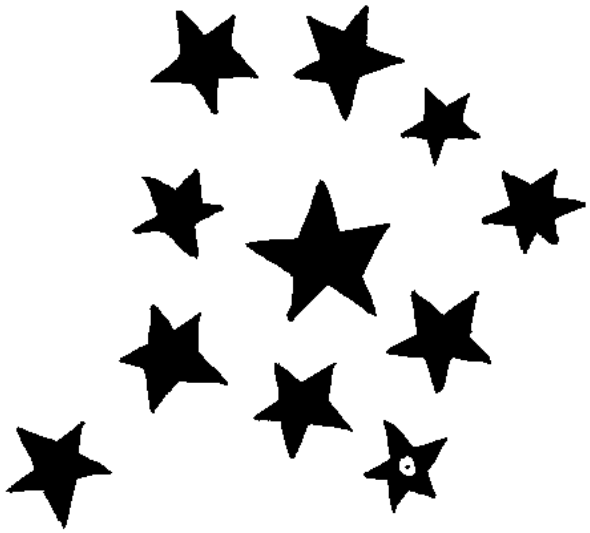

उदाहरण के तौर पर,
समाज ऐसे नियम बनाता है
जैसे लड़की घर या जनाने में रहेगी, लड़का बाहर जाएगा।
या लड़की को खाने और खेलने को कम मिलेगा, लड़के को ज्यादा।
लड़के को अच्छे स्कूल भेजा जाएगा
ताकि वह बड़ा होकर घर का धंधा संभाल सके या अच्छी नौकरी पा सके।
लड़की की पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाएगा।

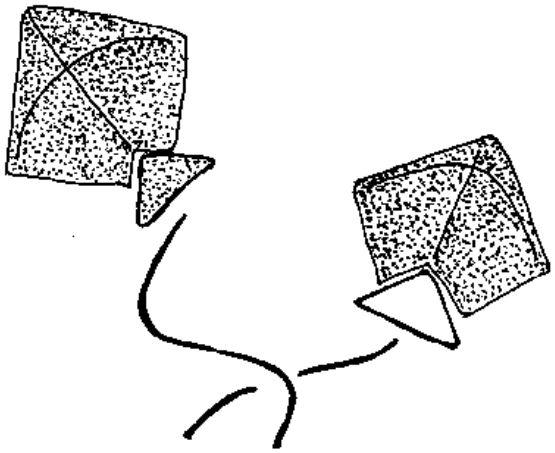

ये सब सामाजिक लिंग भेद प्रकृति ने नहीं बनाए।
प्रकृति तो लड़का और लड़का पैदा करती है।
समाज उन्हें पुरुष और स्त्री में बदल देता है।

समाज की परिभाषाओं की वजह से
लड़के और लड़की के भेद बढ़ते चले जाते हैं
और ऐसा लगता है मानों लड़के और लड़की,
औरत और मर्द की दुनिया ही अलग हो।

सामाजिक लिंग भेद ही लड़के-लड़की,
औरत-मर्द में गैर-बराबरी पैदा करता है।
समाज (या हम सब जो समाज का हिस्सा हैं) कहता है
- पुरुष उत्तम या बेहतर है, स्त्री कमतर है।
जो काम पुरुष करते हैं उसकी मजदूरी ज्यादा है,
औरत के काम की कम, या बिल्कुल नहीं।
मर्द सत्तावान है, औरत सत्ताहीन है।

प्रकृति गैर-बराबरी की बात नहीं करती।
वह सिर्फ प्रजनन के लिए औरत और मर्द को अलग अंग देती है।
उस से ज्यादा कुछ नहीं। भेद-भाव, ऊंच-नीच,
अलग तौर-तरीके इंसान या समाज, यानि हम सब बनाते हैं।
अमीर-गरीब, ब्राहमण-शूद्र,
गोरे-काले, औरत-मर्द,
का फर्क प्रकृति ने नहीं,
समाज ने बनाया है।

सच तो यह है कि हर इंसान में स्त्री और पुरुष दोनों होते हैं।
पर अक्सर समाज लड़की के अंदर छुपे पुरुषत्व को
और लड़के के अंदर छुपे स्त्रीत्व को उभरने नहीं देता।

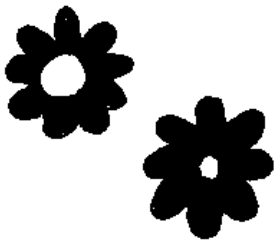

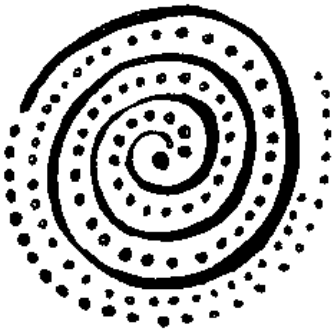

समाज स्त्री-पुरुष की समानताओं को उभारने की
जगह उनके अंतर पर ज्यादा जोर देता है।
और इसी वजह से स्त्री-पुरुष में फर्क बढ़ता रहा है,
उनके रास्ते अलग-अलग होते गए हैं और असमानता की
वजह से उनमें तनाव और द्वंद भी बढ़ता गया है।

ज्यादादर देशों में सामाजिक लिंग भेद पितृसत्तात्मक है
– यानि वह पुरुष की सत्ता दर्शाता है और मर्दों को अहमियत देता है।
जहां सामाजिक लिंग भेद औरतों के खिलाफ है,
वहां लड़कियों पर अनेक बंधन होते हैं,
उनके खिलाफ पक्षपात होता है, उन पर हिंसा होती है।
इसी वजह से लड़कियां लड़कों की तरह आगे नहीं बढ़ पातीं,
अपने हुनर नहीं निखार पातीं। ए
क ही घर में लड़के फलते-फूलते और लड़कियां कुम्हलाती नजर आती हैं।

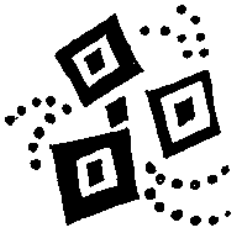

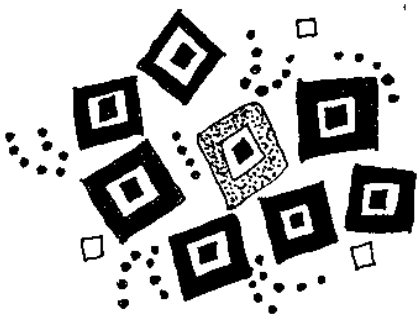

इसी लिंग भेद का बुरा असर सिर्फ लड़कियों पर ही नहीं उनके परिवार,
समाज और पूरे देश पर पड़ता है।
लड़कों पर भी कुछ खास काम गुण और जिम्मेदारियां थोपी जाती हैं।
चूंकि सामाजिक लिंग इंसानों का बनाया है हम सब चाहें तो उसे बदल सकते हैं,
लड़का-लड़की, स्त्री-पुरुष की नई परिभाषाएं दे सकते हैं।
हम एक ऐसा समाज बना सकते हैं जहां लड़की होने का मतलब कमतर,
कमजोर होना नहीं है।
और लड़का होने का अर्थ क्रूर हिंसात्मक होना नहीं है।

सच तो यह है कि हर लड़की और लड़का जो चाहे पहन सकता है,
खेल सकती है, पढ़ सकता है, बन सकती है।
लड़की होने से ही घर का काम और औरों की सेवा करना नहीं आ जाता।
लड़का पैदा होने से ही निर्भयता, तेज दिमाग, ताकत आदि नहीं आ जाते।
ये सब काम और गुण सीखने-सिखाने से आते हैं।
जिसकी जैसी परवरिश होगी वह वैसी बन सकती है।

हम चाहें तो ऐसा समाज बना सकते हैं
जिनमें काम, गुण, जिम्मेदारियां, व्यवहार और हुनर किसी लिंग, जाति, रंग और वर्ग के आधार पर थोपे न जाएं।
सब अपनी मर्जी और स्वभाव के मुताबिक काम कर सकें, हुनर सीख सकें और व्यवहार कर सकें।

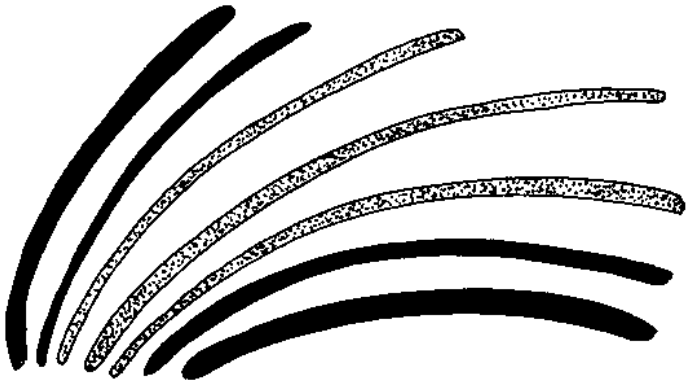

चर्चा के लिए कुछ सुझाव

जीने के दो तरीके हैं। एक है बिना सवाल उठाए हम रिवाजों, परम्पराओं, कानूनों को मानते चले आएं। जो है उसे अपनाये जायें, दोहराए जाएं, बिना यह पूछे कि हम ऐसा क्यों कर रहे हैं, ऐसा करने से फायदा क्या है, नुकसान क्या है?

दूसरा तरीका है कि हम जो भी करें चेतन मन से करें, यह समझ कर करें कि हम ऐसा क्यों कर रहे हैं। सिर्फ इसलिए कि ऐसा रिवाज बना दिया है और हम किसी की खींची लकीर पर चले जा रहे हैं या इसलिए कि वह रिवाज अच्छा है, सब के लिए फायदेमंद है।

हमें लगता है कि चेतन होकर जीना बेहतर है, उस में एक मजा है। उससे हम में और हमारे चारों ओर जड़ता नहीं आती, बदलते हालात के साथ हम भी बदलते रहते हैं। अगर सभी चेतन हों और सवाल उठाने की हिम्मत करें तो फिर समाज पर सोचने, उसे बनाने या बिगाड़ने का ठेका कुछ लोगों के हाथ में नहीं रहेगा।

एक विषय जिस पर चर्चा शुरू हुई है और चर्चा को और चलाने की जरूरत है वह है हमारे घरों और समाज में औरत और मर्द का दर्जा और औरत-मर्द के संबंध। इसी विषय पर चर्चा करने के लिए हमने यह छोटी सी किताब लिखी है।

इस किताब में एक मूल सवाल पूछा है कि लड़की-लड़का, या औरत-मर्द क्या है? क्या फर्क है इन दोनों में? क्या लड़के-लड़कियों के गुण, उनके काम अलग-अलग होने जरूरी हैं? अगर भिन्नता जरूरी है तो उसमें ऊंच-नीच क्यों? क्या भिन्न होकर भी समान हुआ जा सकता है? दोनों के काम को बराबर अहमियत व इज्जत दी जा सकती है?

इस तरह के सवाल उठाकर बच्चों और बड़ों दोनों के साथ छोटे-छोटे समूहों में चर्चा शुरू की जा सकती है। चर्चा ऐसे की जाए कि लोग इन मुद्दों को अपने माहौल से जोड़ सकें। उदाहरण के रूप में हम ऐसे सवाल पूछ सकते हैं - क्या गांव की लड़कियों के बाल लंबे और लड़कों के छोटे हैं?

अगर किसी लड़की के बाल छोटे हैं तो क्या उसका मजाक उड़ाया जाता है?

क्या कोई लड़की नेकर या पाजामा-कुर्ता पहनती है? कौन है व?

क्या लोग उस पर हंसते हैं?

क्या कोई लड़का माला या कान में मुरकियां पहनता है?

क्या उससे वह लड़कियों जैसा हो जाता है?

क्या लड़कियां पेड़ों पर चढ़ती हैं? अगर नहीं तो क्यों नहीं?

आपके परिवार में कौन से काम लड़कियां करती हैं, लड़के नहीं करते?

कौन ऐसे काम हैं जो लड़कियां या औरतों को नहीं करने दिए जाते?

ऐसा क्यों है?

ज्यादा मेहनत के काम कौन करता है?

क्या लड़कियां बाहर खेलने जाती हैं? क्या वे लड़कियों के बराबर खेलती हैं?

क्या लड़कियों को पढ़ने भेजा जाता है?

क्या लड़कियां बिना डर के बाहर आ-जा सकती हैं?

क्या अकेली लड़की के साथ छेड़खानी या बदतमीजी की जा सकती है?

कौन करता है?

आस-पड़ोस के लोग इन हरकतों के बारे में क्या कहते हैं?

क्या है ठीक है कि एक आजाद देश में लड़कियों या औरतें अपने ही मोहल्ले में निडर आ-जा न सकें? इस पर समाज क्यों खामोश रहता है?

क्या परिवार में लड़के-लड़की को बराबर समझा जाता है?

उन्हें बराबर का प्यार या सुविधाएं मिलती हैं? अगर नहीं, तो क्यों नहीं?

क्या कोई ऐसे रिवाज या मान्यतायें हैं जो आपको अच्छे नहीं लगते और आप उन्हें बदलना चाहते हैं?

आपके ख्याल में क्या लड़के-लड़की को बराबर समझना चाहिए?

अगर हां तो क्यों, अगर नहीं तो क्यों नहीं?

अगर घर के अंदर ही किसी के साथ अन्याय होता है तो आपको कैसा लगता है?

आप खामोश रहते हैं, या कुछ करने की कोशिश करते हैं?

क्या आपने अपने परिवार में कुछ बदलने की कोशिश की है?

अगर हां, तो वह क्या था? लोगों की क्या प्रतिक्रिया थी?

इस प्रकार के हम और बहुत से सवाल उठा सकते हैं और हर सदस्य को सोचने और बोलने का मौका दे सकते हैं?

क्या कुछ विषयों पर वाद-विवाद करवाये जा सकते हैं - जैसे घर पर किस का क्या काम है?

कौन ज्यादा काम करता है, कौन किस से कैसे बोलता है, कौन पहले खाना खाता है?

या गांव में कितनी औरतें घर के बाहर काम करती हैं? क्या काम करती हैं?
उन्हें कितनी मजदूरी मिलती है? जो औरत पैसा कमाती है क्या परिवार और समाज में उसकी इज्जत ज्यादा है?

समूह ऐसी बातों की सूची तैयार कर सकता है जो उनके विचार में गलत है? फिर इस बात पर चर्चा की जा सकती है कि जो गलत है उसे कैसे बदला जाए? क्या समूह बदलाव के लिए कोई ठोस कदम उठा सकता है? अगर चर्चा से बढ़कर बात किसी ठोस कदम या कार्यक्रम तक पहुंच सके तो बहुत ही अच्छा होगा।

इन सवालों और विषयों पर अगर और पढ़ने और समझने की इच्छा है तो जागोरी, नई दिल्ली व अन्य महिला समूहों से किताबें, पोस्टर, वीडियो फिल्में आदि मंगवाई जा सकती हैं।

हमारा सपना है कि हमारे परिवार और समाज लड़के-लड़की को एक ही नजर से देखे। उनके साथ भेदभाव न करे। दोनों को बराबर से फलने-फूलने, सीखने-समझने और जीने का मौका दें। अगर बहुत से लोगों का यह सपना हो और बहुत से लोग इस सपने को साकार करने के लिए कुछ ठोस कदम उठायें तो बदलाव जरूर आएगा। वैज्ञानिकों का कहना है कि एक नन्हीं सी तितली के पर फड़फड़ाने भर से काफी दूर तक के माहौल पर असर पड़ता है। अगर हम मिलकर कुछ करें तो बेशक बहुत कुछ बदला जा सकता है।